मणिपुर का शेर बीर टिकेंद्रजीत सिंह

- लेखक : DAKSHIN KOSAL TODAY DESK
- तारीख : December 29, 2023

मणिपुर राज्य की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराएँ और प्राकृतिक सौन्दर्य भारतवासियों के लिए गौरव के विषय हैं, तो उसका शौर्य, साहस एवं त्याग-बलिदान से परिपूर्ण इतिहास भारतवासियों के लिए प्रेरणास्रोत है।

सन् १८९१ के एंग्लो-मणिपुर युद्ध में मणिपुर के बहादुर लोगों ने औपनिवेशिक शक्तियों का प्रतिरोध जिस वीरता और साहस के साथ किया; वह इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। भारतमाता की स्वतंत्रता और सम्मान के लिए सन् १८९१ के युद्ध में शहीद होनेवाले वीरों के हम सदा ऋणी रहेंगे।

आज हम उन असंख्य वीरों को श्रद्धांजलि दे रहे हैं, जिन्होंने सन् १८९१ में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध लड़ते हुए अपना जीवन दाँव पर लगा दिया था। सन् १८९१ में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध हुए एंग्लो-मणिपुर युद्ध में शहीद होने वाले राज्य के वीर नायकों को श्रद्धांजलि देने के लिए मणिपुर राज्य प्रत्येक वर्ष १३ अगस्त के दिन "देशभक्त दिवस" मनाता है।

बीर टिकेंद्रजीत सिंह भारत माँ के लिए प्राण उत्सर्ग करनेवाले ऐसे ही एक जांबाज सपूत थे। मणिपुर के तत्कालीन साम्राज्य के राजकुमार टिकेंद्रजीत महान देशभक्त और ब्रिटिश साम्राज्यवादी योजना के घोर विरोधी तथा देश की एकता-अखंडता के दृढ़ समर्थक थे।

उन्होंने स्वातंत्र्य-वेदी में सहर्ष अपनी सभी राजसी सुख-सुविधाओं और अन्ततः जीवन की आहुति दी। उनका जीवन वीरता की साक्षात प्रतिमूर्ति था और उनका विश्वास था कि –"वीरभोग्या वसुन्धरा" अर्थात् वीर ही इस भूमि को भोगने के सच्चे अधिकारी हैं।

राजकुमार टिकेंद्रजीत ने साहसपूर्वक ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति के कूटनीतिक और विस्तारवादी कृत्यों से जनमानस को अवगत कराया तथा अदम्य साहस और निर्भीकता के साथ अंग्रेजी साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध युद्ध किया। इसी कारण उन्हें 'मणिपुर का शेर' कहा जाता है। यहाँ तक कि ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सरकार ने उनकी वीरता, निडरता तथा पराक्रम की तुलना एक 'खतरनाक बाघ' से की थी।

कहा जा सकता है कि वे दैवीय शक्तियों का संयोग थे। क्योंकि – "उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः। षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैवं सहायकृत्।" अर्थात् जहाँ उद्योग, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छह (गुण) होते हैं, वहाँ दैव भी सहायक होते हैं।

इस परम पराक्रमी और बुद्धिमान सपूत को आमने-सामने के युद्ध में अंग्रेजों द्वारा नहीं हराया जा सका तो छल-बल का सहारा लेकर एक औपनिवेशिक कानून की आड़ में विशेष अदालत द्वारा उन्हें दोषी ठहराया गया। और सन् १८९१ में १३ अगस्त के दिन बीर टिकेंद्रजीत को सार्वजनिक रूप से मार दिया गया।

टिकेंद्रजीत सिंह महाराजा चन्द्रप्रकाश सिंह और चोंगथम चानु कूमेश्वरी देवी की चतुर्थ संतान थे। उनका जन्म २९ दिसम्बर, १८५६ को हुआ था। उन्हें "कोइरेंग" भी कहते थे क्योंकि वे बचपन से ही लोकप्रिय तथा स्वतंत्रता प्रेमी थे। धैर्यवान होने के साथ-साथ वे कुशाग्र बुद्धि वाले थे। बाद में वे मणिपुरी सेना के कमाण्डर नियुक्त हुए थे। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में उनका अद्वितीय स्थान है। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण मणिपुर का अपना प्राचीनतम एवं गौरवपूर्ण इतिहास रहा है।

मणिपुर के राजाओं ने सन् १८९१ में अंग्रेजों से पराजित होने तक अपनी स्वतंत्रता और सम्प्रभुता के लिए लगातार संघर्ष किया था। एक लम्बे और अनवरत संघर्ष के बाद ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने मणिपुर पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। मणिपुर के आंतरिक संकट और उसके बर्मा के साथ चले १८ वर्ष लम्बे संघर्ष का लाभ उठाकर वे ऐसा करने में सफल हुए।

प्रिंस गम्भीर सिंह के नेतृत्व में प्रथम एंग्लो-बर्मी युद्ध (१८२४-१८२६) में मणिपुर ने बर्मा पर विजय प्राप्त की। परिणामतः, मणिपुर तबाही से उबर गया और गम्भीर सिंह को मणिपुर का राजा बनाया गया। परन्तु उस समय राज्य की सभी महत्त्वपूर्ण शक्तियां अंग्रेजों के हाथ में थीं। राजा ब्रिटिश हस्तक्षेप का विरोध नहीं कर सकता था।

राजा चन्द्रकांत सिंह के उत्तराधिकारी महाराजा सुरचंद्र सिंह के शासनकाल में अंग्रेजों का हस्तक्षेप बहुत अधिक बढ़ गया था। जिसके परिणामस्वरूप २४ अप्रैल, १८९१ को खोंगजोम युद्ध (अंग्रेज-मणिपुरी युद्ध) हुआ। जिसमें वीर सेनानी टिकेंद्रजीत और पाओना ब्रजवासी जैसे अनेक योद्धाओं के जबर्दस्त संघर्ष और जनसामान्य के मजबूत प्रतिरोध के बावजूद मणिपुर अंग्रेजों के पूर्णतया अधीन हो गया।

राजपरिवार का सदस्य होने के नाते टिकेंद्रजीत अंग्रेजों के कूट स्वभाव से परिचित थे। अतः वे मणिपुरवासियों को उनके वास्तविक दृष्टिकोण और अंतरतम दुर्भावनाओं के बारे में सचेत करते रहते थे। महाराज गम्भीर सिंह की मृत्यु के उपरान्त उनके बड़े बेटे, सुरचंद्र ने मणिपुर के सिंहासन का दायित्व सम्भाला। अन्य राजकुमारों को राज्याधिकारी, सेना के जनरल और पुलिस प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया।

बाद में, झलकारी की मृत्यु के बाद टिकेंद्रजीत को सेना का जनरल नियुक्त किया गया था। लेकिन राजकुमारों के बीच आपसी गलतफहमी और मनमुटाव पैदा हो गया। इसने अन्ततः राज-परिवार को दो गुटों में विभाजित कर दिया। एक गुट टिकेंद्रजीत के साथ था तो दूसरा पाकसाना के नेतृत्व में कार्यरत था। राजा इस स्थिति से अनजान रहे और अराजकता बहुत ज्यादा बढ़ती चली गई।

टिकेंद्रजीत को लगता था कि राजा पाकसाना के पक्षधर हैं। अंग्रेज सूदखोरी से अपने साम्राज्य का विस्तार करते थे। वे मोटी

ब्याज पर राजा और राजपरिवार को कर्ज देकर धीरे-धीरे उनके राज्य के हिस्सों को हड़पते चले जाते थे। यही नीति उन्होंने मणिपुर के राजपरिवार के प्रति भी अपनायी।

इसे राजकुमार टिकेंद्रजीत ने स्वीकार नहीं किया। वे इस तथ्य से भी भलीभांति अवगत थे कि ब्रिटिश लोग मणिपुर को अपनी एक "कॉलोनी" बनाने के लिए अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने अपने राज्य की सम्प्रभुता तथा स्वतंत्रता की रक्षा हेतु एक योजना बनाई।

२२ सितम्बर, १८९० को टिकेंद्रजीत ने दो अन्य राजकुमारों एंगुसन और जिलंगंबा के साथ सुरचंद्र सिंह के खिलाफ विद्रोह किया और राजा सुरचंद्र को सिंहासन से हटा दिया। सुरचंद्र सिंह ने ब्रिटिश निवास में शरण ले ली। तब कुलाचंद्र ने राज्यभार सम्भाला और टिकेंद्रजीत उसके उत्तराधिकारी बने। इस घटना को मणिपुर के इतिहास में 'पैलेस विद्रोह' के रूप में जाना जाता है।

बाद में, पूर्व शासक सुरचंद्र सिंह कलकत्ता के लिए रवाना हुए। लेकिन उन्होंने टिकेंद्रजीत को सूचित
किया कि वे धार्मिक-यात्रा पर वृंदावन जा रहे हैं। कलकत्ता पहुँचने के बाद उन्होंने मणिपुर राज्य का अपना सिंहासन पुन: पाने के लिए ब्रिटिश सरकार को एक याचिका भेजी। उनकी इस याचिका के परिणामस्वरूप अंग्रेज मणिपुर की आतंरिक फूट और संकट से बखूबी अवगत हो गए। वास्तव में, इस याचिका ने ब्रिटिशों को मणिपुर के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर दिया।

भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लैंड्सडाउन ने कुलाचंद्र को राजा बनाए रखने का निर्णय लिया।
लेकिन मणिपुर सिंहासन के उत्तराधिकारी पद से टिकेंद्रजीत को हटाने का आदेश दिया गया। क्योंकि अंग्रेज जानते थे कि टिकेंद्रजीत जैसा राष्ट्रवादी उनकी औपनिवेशिक योजनाओं में बहुत बड़ी अड़चन है। उसकी अनुपस्थिति में ही मणिपुर को ब्रिटिश उपनिवेश में रूपान्तरित किया जा सकता है।

अत: २२ मार्च, १८९१ को मुख्य आयुक्त जेडब्ल्यू क्विंटन सैनिकों की टुकड़ी के साथ मणिपुर पहुँचा।
टिकेंद्रजीत को गिरफ्तार करने के लिए अंग्रेजों द्वारा एक गोपनीय योजना बनाई गई थी। लेकिन उनकी यह गुप्त योजना उजागर हो जाने के कारण विफल हो गई। राजनीतिक एजेंट ग्रिमवुड ने तब राजा कुलाचन्द्र को टिकेंद्रजीत को अंग्रेजों को सौंपने के लिए कहा। राजा कुलाचंद्र ने इसके लिए साफ इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने टिकेंद्रजीत को गिरफ्तार करने के लिए बल प्रयोग किया।

२४ मार्च, १८९१ की शाम को ब्रिटिश सैनिकों ने पैलेस कम्पाउंड, विशेष रूप से टिकेंद्रजीत के निवास पर हमला किया। इस हमले में सांस्कृतिक कार्यक्रम देख रहे महिलाओं और बच्चों सहित अनेक निर्दोष नागरिक मारे गए। हालांकि, मणिपुरी सेना अपने आक्रामक प्रतिरोध में सफल रही और अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा।

पांच अंग्रेज अधिकारियों- क्विंटन, ग्रिमवुड, लेफ्टिनेंट कर्नल सिम्पसन, कोसिन और बुलेर को भागकर तहखाने में शरण लेनी पड़ी। जिन मणिपुरवासियों के निर्दोष बच्चे, महिलाओं और रिश्तेदारों को अंग्रेजों द्वारा मार दिया गया था, उनके मन में बदले की भावना इतनी प्रबल हो गई कि उन्होंने इन पांचों अंग्रेजों को मार डाला।

इसके परिणामस्वरूप १८९१ में एंग्लो-मणिपुरी युद्ध हुआ। इस भयानक युद्ध में अंग्रेजों ने मणिपुर को तहस-नहस कर दिया। २७ अप्रैल, १८९१ को कंगला पैलेस को अंग्रेजों ने अपने कब्जे में ले लिया और मेजर मैक्सवेल मुख्य राजनीतिक एजेंट बन गया।

ब्रिटिश भारत सरकार ने जांच- पड़ताल और सजा-निर्धारण के लिए लेफ्टिनेंट कर्नल जॉन मिशेल के अधीन एक विशेष आयोग का गठन किया। इस जांच में टिकेंद्रजीत को दोषी ठहराया गया और अंग्रेजी अदालत द्वारा उन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया।

टिकेंद्रजीत अपने विलक्षण युद्ध- कौशल, अद्भुत पराक्रम तथा सक्षम प्रशासन के कारण अत्यन्त लोकप्रिय थे। कहा भी गया है कि – "प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्। नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्" अर्थात् प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है; अर्थात् जब प्रजा सुखी अनुभव करे तभी राजा को संतोष करना चाहिए।

प्रजा का हित ही राजा का वास्तविक हित है। अतः मणिपुरवासियों ने अपने प्रिय राजकुमार की प्राण- रक्षा के लिए उनकी फाँसी का पुरजोर विरोध किया। परन्तु लोगों की प्रबल भावना और उनके सक्रिय विरोध के बावजूद अंग्रेजों ने बीर टिकेंद्रजीत को १३ अगस्त, १८९१ को आम जनता के सामने एक खुली जगह पर फांसी दी गई ताकि लोगों में डर पैदा किया जा सके।

मणिपुर राज्य की महिलाओं ने भी उनके बचाव में एक आंदोलन शुरू किया था, परन्तु उनका यह आन्दोलन मणिपुर के भविष्य बीर टिकेंद्रजीत को नहीं बचा सका। उनका बलिदान मणिपुर की स्वतंत्रता, सम्मान और जनकल्याण की भावना के लिए था। उन्होंने विदेशी शक्ति का विरोध करते हुए स्वदेश रक्षा हेतु अपने प्राण गंवाए।

बीर टिकेंद्रजीत सिंह की यह उदात्त भावना आज की युवा पीढ़ी को भी राष्ट्र की स्वतंत्रता, सम्मान और जनकल्याण हेतु जीवन-बलिदान करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करती है। इस महानायक को सम्मानित करते हुए मणिपुर विधानसभा ने अगस्त, २०१९ में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर तुलीहल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम बदलकर 'बीर टिकेंद्रजीत अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा' कर दिया है।

आलेख

प्रो. रसाल सिंह
प्रोफेसर, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली
मोबाइल - 8800886847